देश द्रोहियों से सावधान !

(लफ्ट राइट करता लोहासिंह राम भरोसे नामक एक आदमी को पकड़ कर लाता है जो अनाधिकारी तौर पर राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के नाम पर चंदा वसूल रहा था।)

लोहासिंह : लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, हाल्ट, बइठ।

रामभरोसे : सरकार, हमरा के छोड़ देल जाव। गुरू किरिये हम कान कनैठी देत बानी। अब हम ई गल्ती ना करब।

लोहासिंह : अरे जंगल के चिरई अब तुम पिंजड़ा में बाझ गई है। अब तुम भाग नहीं सकती है। तुम देस के मोसीबत का नजाएज फैदा उठाती है ? लूट में

चरखा नफा का खिलकट देखाती है ? तुम्हारे जइसा सिंकार त हम खोजता फिरता है।

राम भरोसे : हमरा कुकुर कटलस कि हम रउआ से चंदा के जिकिर कहलीं। हम का जानी कि रउए अतना कडियल निकलब। एक डपट में हमार दम सरक गइल। बहुत दिन के आदत बिगड़ल बा। कबो बाढ़ के नांव पर, कबो अनाथालय के नांव पर चंदा मांग के रोजी चलावत रहीं।

लोहासिंह : एही से अबो जब हम लोग देस खातिर चंदा करता है तुम पाबलिक पर हाथ साफ करके सब अमदनी गपाक से लील जाने का फेर में थी। नकली रसीदो छपा लिया है।

राम भरोसे : अब ई काम कबो ना करब। गुरू किरिये। रउआ बिसवाल करीं। हमरा के जाये दीं।

लोहासिंह : एक त हमहीं तुमको नहीं छोड़ेगा काहे कि तुम्हारा जइसा देस दरोही का नाक पर आलू रखके चैन-मारी करने में हमको बहुत सवाद मिलता है। उससे तुम्हारी जान बाँचियौ जाईं त खदेरन को माई तुम्हारा जइसा चार सै बीस के अत्तह बढ़नी फिकेसन करेगी कि तुम्हारा परान फट दे मू जाई। ओहू से बांच गया त भगजोगनी तुम्हारा बेलमुंड पर करिखाह हांडी भड़ाक से इस्तेमाल करेगी। बाबू बुलाकी सिंघ का खीस तुम जनबे नहीं करता है। लागेगा कम्मल परेड कराने त बोंकला छूट जाई आ ओहू से बांच गई त हमरा फाटक बाबा मंतर का

जोर से जेबा से बीच के अन्दर तुमको बंदर बना देगा (बिगुल की ध्वनि)। देखो बुलाकी मिश्र बिगुल बजाता हुआ पूरा बटैलियन के साथ छी मानुस छी मानुस करते सब एनही आता है। अब तुम गया बूंट लादने।

राम भरोसे : दादा रे, हम का जानी कि एह गाँव में अइसन अइसन लोग बा ? अब जान कइसे बाँची ?

लोहासिंह : जान त नाहिये बांची का है कि भागने त हम तुमको देगा नहीं। हं दुरगत से बांचना चाहता है त ओह बोरा में लुका जाव। हमहूँ तीन दिन के बाद सहर से लवटा है। तनी गाँव घर के दुखम सुखम हो जाय तब तुम्हारा धुरछक छोड़ावेगा। चलो।

राम भरोसे : जी अच्छा।

(वह बोरा में बैठता है। लोहासिंह बोरा बंद करता है।)

लोहासिंह : अब हम बान्ह के बोराबंदी कनपलीट किया। चुपचाप रहेगा बूझा ? पूरा बटैलियन आवता है। जान जाएगा त जान ले लेगा।

राम भरोसे : जी। हम सांसो ना लेब।

(खदेरन की माँ, भगजोगनी, बुलाकी और पाठकजी का प्रवेश)

भगजोगनी : देखीं मलकाइन, मलिकार पहिलहीं से आके बइठल बानीं।

पाठक : जै होखे जजमान, बड़ा दिन लगा देल ?

लोहासिंह : डंडवत मारता है फाटकजी।

बुलाकी : सलाम पाहुन।

लोहासिंह : मोटाइल रहो चंपियन।

खदेरन की माँ : का जी सहर गइलीं त सहरे हो गइलीं ? आ मार बोढ़नी रे, कइसे त इनका मन लागेला ? का का ले अइलीं हं ?

लोहासिंह : बहुत माल मसाला ले आया है। हाथ के ककुलहट मिटाने का पूरा सरंजाम है। ३६ जनवरी बेलकुल नगीच है। सहर से नया झंडा कीन के ले आया है उस दिन देस के तरंकी खातिर नया परन करना है। नेफा आउर लद्दाख के मोरचा पर लड़ने वाला, बहादुर के नया सौगात भेजना है, ग्राम सेना के सानियल परेड करना है, सोना के बंड कीनना है बोलो। गांव के तैयारी का परोगराम पूरा दनदनाता है कि नहीं ?

खदेरन की माँ : सब के सब फिकिर, इनका बस इहे फिकिर। उहे खिसा बा कि सियरा के मन बसे ककरी के खेत में। थाकल खेदाइल आइल बानी, कुछ पानी उनी पी लिहीं तब सुनब इहां के हाल।

लोहासिंह : उसका फिकिर नत करो। लबटत इस कौल पर रुक गया। ओहिजे डबल से सरबत ओरबत घोराइल। एगो सिंकारो हाथ लाग गई। अच्छा हम अपना बाद में सुना देगा, पहिले तुम इहां के हाल सुनाओ।

खदेरन की माँ : हाल त इहां के बेहाले बा। रउआ एगो हमरा के

सोझिया पा गइल बानी. ले के सब गहना जमा कर अइलीं। हमहूँ कहलीं कि जाय द भाई, देस के इज्जत के सवाल बा। देस रही त ढेर गहना बन जाई। झरोखा के पितियाइन से २६ जनवरी के सोना के बंड कीने के कहे गइलीं त लगली बहाना करे। चुपे चुपे सुनत बानी कि गहनो बनवावत बाड़ी। ना रे भगजोगनी।

भगजोगनी : हँ मलकाइन, सूटरो बीने में कुछ लोग महंटिआवत बा। राम बेलास के माई बोरसी भिरी सूटर बीनत रही, दूगो ऊन के गोले बोरसी में जर स्वाहा हो गइल। मूरत सिंघ बो आधा बीनल सूटर टीसन पर भुलवा देली।

बुलाकी : तोहरा ग्राम सेना के परेड अब हम ना करवाइब। महराज कुछ लोग बाते नइखे सुनत? एक त ऊ लोग लैन पर अइबे ना करे। आइये जाई त बुझी कि परेड ना ह दिलग्गी है। लैन में खड़ा होके सुदरसन खैनी बनावे लागलन आ खोभारी बीड़ी सुनगा के गप हांके लागलन। छबीला के आज डंटली कि कमर सोझ करके खड़ा रहत बुरबक गावे लागल दरद बा दरद बा दरद बा हो बचपन से कमर में दरद बा।

सब केहू लागल हंसे। इहे दू तीन जाना ठीक हो जइतन त ग्राम सेना के बरूद बना देती।

पाटक : जजमान, गनतंत्र दिवस के तैयारी आउर देस के तैयारी त गाँव करिये रहल बा बाकि कुछ लोग ओही दिन मेला घूमे के फेर में बा। समुझावत

बानी त लोग कहता कि दुनिया भर के जलसा होइये रहल बा त हमनिये के का देस खातिर सरबस सुख तेयागे के ठेका ले ले बानी ? चीन संगे जे समझौता के बात चल रहल बा ओही से कुछ लोग के ममिला ठंढ़ा गइल बा।

लोहासिह : हूँ। सहरो के इहे हाल है फाटक जी। सहर में बिलेक आउट के टरेनी होता है त बत्ती बुताने खातिर कहने पर कुछ लोग मारा मारी करता है। हवाई हमला खातिर टरंच त चारों देने खोदाया है बाकि उसमें परावटिस करते हम केहू के ना देखलीं। गाँव के खबर सुन के करेजा आउर जुड़ा गया। कहां हम सहर के लोग के गाँव के परतूत देता था कि आप लोग ढीला पर गया बाकि हमरा गांव सेंका हुआ ढोल का माफिक टनकता है। कहाँ ई हाल ? हमारा त अकिले काम नहीं करता है ?

खदेरन की माँ : सउंसे दुनिया के फिकिर रउआ अपना कपार पर काहे के ओढ़ले रहीला ? जब समझौता के बतकही चलिये रहल बा त देखलीं समझौता के रंग ढंग।

बुलाकी : पाहुन मलेटरी के इमदी हवन। इनका दिन रात लड़ाइये लउकेला। इहां समझौता कि कागद सुनतबानी दाखिल हो गइल।

भगजोगनी : लोग इहे त कहता कि जब लड़ाई होई त लड़ लिआई। अबहीं समझौता के बेरा घरी काहे परेशान होई ?

पाटक : जजमान, अबहीं जेबासे छोड़े फिकिर। देखल

समझौता के ऊंट कवना करवट बइठता ।

लोहासिंह : नो नो फाटक जी, इस पैंट पर फिकिर नौट कइसे ? हम चाहे फिकिर के छोड़ दें बाकि फिकिर हमको नहीं छोड़ता है । हम जाहिल डिपाट का इमदी है, दोसरा से बंचवा के एखबार सुनता है । बाकि असलियत आउर नकलियत का भेद हम खूब बूझता है । हम बहुत मुंड में सहर से आया था बाकि इहां का हाल सुन के जीव खट्टा हो गइल । सुन लीजिये आप लोग दूनोकान खोल के जबले हमारा बोडिस के डिस्टिक में जान के चिरई मारक टैन करती है हम असलियत पर पर्दा नहीं परने देगा । घाव पर रेसम के चद्दर डाल देने से घाव चाहे लउके नहीं बाकी नीमन नहीं हो जाता है । लड़ाई के तैयारी समझौता के भरोसा पर टालना हाई कलौटी के बेकुफान होखी । भल गिरहस कहूँ बरखा के उम्मेद में सिंचाई के तैयारी छोड़ देता है ? बानर के नियत पर भेरोसा करके केहू बगइचा के रखवाली छोड़ता है ? आप जानते हैं कि दुस्मन बहुत अधिका तैयारी किया था त आप कम काहे कीजियेगा ? दोस्ती आउर दुस्मनी दुनो बरोबरी का चीझ है । समझौता हो जाय त वाह वाह नहीं ते हम तैयार है । थपरी एके हाथ से नहीं बजता है । चीन अबे से टिरिक बाजी करता है । भारथ लेबुल मिलता है त ऊ पैंतरा बदल देता है । एक ओर त चीन देखाता है कि ऊ सान्ती चाहता है, गोली बन्द करके फौज पीछे हटाता है दोसरा देने बातचीत

का आड़ में लड़ाई के धमकी देता है। सोचिये, चीन सझमौता चाहता है त तिब्बत में लाखन के तैदाद में फौज का जमाकड़ा कवना मलतब से किया ? तवांग आउर किबूतू से फौज काहे नहीं हटाया ? लद्दाख से काहे नहीं हटा ? हमारा के मैकमेहन लैन नहकार के ऊ अपना कंटरौल लैन का बात करती है आउर भारथ का बहुत लमहर हिस्सा सोझे लील जाना चाहती है। ई लड़ाई जल्दी फरिआने वाली चीझ नहीं है, आप लोग हैं कवना फेरा में ? खाली लड़ाई के खिलाफ लड़ाई नहीं लड़ाई के खतरा के खिलाफ भी आपको लड़ाई लड़ना है।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, चीन त उहे हाल कइले बा कि जइसे चोर कहे कि चोरी के माल हमरा के दे द तबे सनझौता करवा।

बुलाकी : एकरे के कहल जाला, जब्बर चोर सेन्ह में गावे। भला कहीं त ? अइसन दुस्मन सिवाना में महजूद बा आ गाँव के लोग ठीक से परेड नइखे करत। उहो कब जब कि खुद बाबू बुलाकीसिंघ परेड सिखावत बाड़न।

लोहासिंह : अब त भाई अगर इज्जत के साथ जीना है त सेना के तागद, रोपेया पइसा के तागद आउर अकिल के तागद बढ़ावहीं के परी नहीं त जियने के त मोरी में के पिलुओ जियवे करता है। इस टैन खाली बाहरे के दुस्मन से नहीं, देस को भीतर के दुस्मन से भी बचाना है। एगो भीतर क दुस्मन त कोठरी में बोरा में बान्ह के रखा हुआ है।

(सभी—बोरा में ?)

लोहासिंह : ई बिना हुकुम के गलत फैमली वाल चाना उगाहता था ।

पाठक : हाली बोरा खोल बुलाकीसिंघ, तनी हो जाय जूता लात तवैव च ।

बुलाकी : बोरा खोले में अबेर होई, हम उपरे से आठ दस हाथ लगावत बानी ।

भगजोगनी : मलकाइन ले आई बढ़नी ?

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, इहो पूछल जाला ? बहरकू तूँ देस से दुसमनी करब त हमनी के तोहरा के जीमत छोड़ब ? ले, ल, आउर ल ।

(रामभरोसे चीखता है ।)

लोहासिंह : हालट हालट खरेदन को माई । अबही इसको गाँव को पाबलिक के सामने देखा के भीतरी दुस्मन का नमूना पेस करेगा आउर गाँव को भीतरी आउर बाहरी दुस्मन से लड़ने खातिर तैयार करेगा । बुलाकी बिगुल बजाओ । आउर इस बोरा के घिसिया के दलान पर ले चलो । बाहर के दुस्मन का नाकबोल भरकुस करनेवाली आउर भीतर के दुस्मन को पुलिस में हैंडिल करने वाली बटैलियन रेडी, अटेनशन, फारवर्डा मार्च, लेफ्ट राइट लेफ्ट राइट लेफ्ट ।

(पर्दा गिरता है ।)

J. P.

राष्ट्रीय संकट काल में आपसी झगड़े

(बरामदे में खदेरन की माँ अकेली तराजू लिये बैठी है ।)

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, जीव छव पांच में परल बा, कबे से हाथ में तरजूई लेके बइठल बानी । ऊ सात मन धान तउल के चाना देबे के कह गइल रहन एने गाँव भर में हाला बा कि लड़ाई बन्न हो गइल अब बेहरी ना दिआई । नउलीं कि ना तउलीं कुछ बुझाते नइखे ।

(लोहासिंह लेफ्ट राइट करते आता है ।)

खदेरन की माँ : मोके पर चहुँप त गइलन । अजी चीन के सेना त लवट न गइल !

लोहासिंह : का ? चीन के सेना ? हँ कुछ सेना जरूर आपिस गई है ।

खदेरन की माँ : अब लड़ाई बन्न बा ?

लोहासिंह : जरूर । दुनो सैड से इस टैन गोली नहीं चलता है । समझौता के बतकही चालू है। हाइकलौटी के दिमाग वाला लोग आपुस में फैसला करेगा, बाकि धान के ढेरी का पास बइठ के, हाथ में तरजूई लेके, तुम एतना इनकौरी काहें करता है, बढ़नी बटैलियन का कप्तान ?

खदेरन की माँ : त पूछीं ना ? हमरा से त दलिद्दर के फूआ कहली । अबगे तरजूई बटखरा लवटावे आइल रही । कहत रही कि खबर कागद में छपा गइल बा कि अब लड़ाई ठंढा हो गइल, धान, रोपेया भा सोना देबे के अब कवनो जरूर नइखे ।

लोहासिंह : हालट खदेरन को माई । अपना नरेटी के अटनसन मारो । एकबार के खबर कागद फाटकजी से डेलो हम बंचवा के सुनता है कि दलिद्दर के फूआ सुनती है ? सहर में अपसर लोग से मिलन करके मोर्चा के बतकही हम बतियाता है कि दलिद्दर के फूआ बतियाती है ?
दलिद्दर के फूआ के बात मानेगा त सउंसे देस दलिद्दर हो जाई ।

खदेरन की माँ : ल भला सुन इनकर बात । जब लड़ाइये नइखे होत त तैयारी काहे के होई ?

लोहासिंह : खदेरन की माई देस के तैयारी आउर लड़ाई में कवनो कनकसन नहीं है । जब देश तैयारी करेगा,

माजगूत रहेगा त केहू हमलोग मे लड़ाई नहीं करेगा। हमको तैयारी इस खातिर नहीं करना है कि भारथ कवनो देस पर कबजा मारना चाहता है। कबहीं नहीं। भारथ हरमेसा से पंचसील का परचार किया। हम समझौता खातिर तइयार हैं बाकि इज्जत के साथ, सरत आउर दबाव के साथ नहीं। ई तबे होखी जब देश में सब ओर तरंकी होखेगा आउर देश में एतना तागद आ जाई कि कोई दुस्मन इसको ऊपर अंगुरी उठाने का हिम्मत नहीं करेगी।

खदेरन की माँ : ई त बड़ले बा, जब इमदी चुहानी के केंवाड़ी खिरकी बरियारी से बन्न रखी त बिलाई घुस के दूध दही कइसे जियान करी?

लोहासिंह : ठीक बानी बोलता है। जिस माफिक रसोई घर में केवाड़ी लगाना बिलाई से लड़ाई नहीं है, उसी माफिक देश के तैयारी किसी को ऊपर चढ़ाई नहीं है। उल्टे लड़ाई के दुरघटना का फुलिस्टौप है।

खदेरन की माँ : कइसे त खिसो बाकि अबरा के मेहरारू गाँव भर के भउजाई। कमजोर इमदी के सब केहू सतावेला।

लोहासिंह : चाबस, इसी कमजोरी को हटाने खातिर, देश के बेइज्जती से बचाने खातिर, तैयारी करना है, अधिका दान देना है, परडकसन बढ़ाना है मलेटरी के पांवर माजगूत करके उसको हरबा-हथियार से लैस करना है। तुम धान तउलो, हम गांव में तैयारी रोकनेवाली के तुरंत बदरेसन सिटलमिट करने जाता है। (बिगुल की आवाज)

खदेरन की मां : आ मार बढ़नी रे, कवनो गड़बड़ भइल का ! बुलाकी भैया बिगुल बजावत बाड़न । (पुकार कर) अजी चलली कहां ! बुलाकी भैया पाठक जी आउर दूगो इमदी लोग एनहीं आवता ।

बुलाकी : पाहुन तू झामलाल के सोझिआव, ई चाना के धान नइखन देत आ इनकरे देखा देखी गाँव के दोसरो लोग मह टिआवत बा ।

पाठक : जजमान जेबा से तू गजराज चउबे के समुझाव, ई मारामारी करे पर तइयार बाड़न ।

बुलाकी : ऊ त हम रोकलीं ना त लाठी छूट जाइत ।

पाठक : जेबासे अइसे इमदी सनके ला । हम कहलीं कि चल जा जजमाने भिरी फैसला होई ।

गजराज : हमार जमीन केहू हड़पे के चाही त हम जान न छोडब ।

झामलाल : आंखें न दिखाइये गजराज जी । मैं भी पुराना मुकदमेबाज हूँ । घर की एक एक ईट न बिकवा दूँ तो मेरा नाम झामलाल नहीं ।

खदेरन की मां : आ मार बढ़नी रे । कवना बात के झगरा भइल ई बुझाते नइखे ।

झामलाल : नमस्कार बाबू लोहासिंग ।

लोहासिंह : जयहिन्द बोलिये ।

झामलाल : जयहिंद, जयहिंद मांजी । बुलाकी सिंग आप मेरा हाथ छोड़िये । अलग खड़े रहिये । मैं सब कुछ समझाता हूँ ।

बुलाकी : पाहुन ई पुरान घाघ हवन। सोझ अंगुरी से घीब न निकली।

झामलाल : बात ये है जनाब कि मैं शहर का आदमी, आपके गाँव में इसी साल थोड़ी जमीन खरीदी है, आपके गाँव का सिताबी बटाई पर मेरा खेत जोतता बोता है, मैं अपने हिस्से का गल्ला लेने आया तो ये लोग मुझे तंग करते हैं।

पाठक : हम जेबा से आज ले केहू के सपनों में तंग ना कइलीं रउआ के का तंग करब? हम त सुरच्छा कोस खातिर धान के बेहरी मांगत रहीं।

बुलाकी : ई महराज अइसन कानून छांटे लगलन कि सउंसे गांव भड़क गइल।

गजराज : नीम पर करैला ई कि हम सुरच्छा कोस में धान देत रहली त झामलाल रोक दिहलैं, कहत हउएं कि हमरो जमीन में इनकर हिस्सा है।

पाठक : गजराज के ऊ जमीन अशर्फी के बाबूजी दान देले रहन। हमनी के पक्का जानत बानी।

गजराज : अब ई कागद में लटपट करके हमके घर का देबे के चाहत हौअन। हम त आजै इनके आटा दाल के भाव बता देइत बाकि बुलाकी बाबू बिगुल बजा के भीड़ जुटा दिहलैं। लोग बीच बचाव कै दिहलैं।

झामलाल : आप से तो कचहरी में ही बातें होगीं। आप जैसे बीसों को जेब में लिए फिरता हूँ।

गजराज : कचहरी काहें, चल ब.हर, बताई ला तोहके।

खदेरन की माँ : ई लोग त पूरा मारा मारी के तैयारी कइले बा, आ मार बढ़नी रे।

बुलाकी : आई लोग के आपुस के झगरा में देस के सुरच्छा के काम खटाई में फूलता। हम कबे धान तसील लेले रहतीं।

पाटक : जजमान, जेबा से का बीच के बगल में गुमसुम काहे लगवले बाड़ ?

लोहासिंह : त का करें फाटक बाबा, थपरी पार के हंसे ? हंसे कि जिस टैन देस मुसीबत में है। गांव में लोग आपुसी झगरा आउर मोकदमा में अपाना समय आउर रोपेया बरबाद करता है ? हंसे, कि जिस टैन देस का किस्मत पर आफत के घटाटोप बदरी घिरल आवती है, देस के सिवाना पर संकट ताल ठोकता है, आजादी सब केहू से अपाना कीमत मांगती है, उस टैन हमारा ई दूनों भाई लोग एकता का नरेटी पर छुरी रेतती है ?

झामलाल : मैं तो आज ही अखबारों में पढ़ा रहा था कि लड़ाई बन्द हो गई।

बुलाकी : तका बूझत बाड़ कि एगो तू हीं दुनिया भर के खबर जानल।

पाटक : इहां हम रोज जजमान के सउँसे एकबार विग्यापन समेत बांच के सुनाई ला जेवा से।

लोहासिंह : हमारा जिनगी के एक तिहाई हिस्सा लड़ाई के मैदान में गोली के बौछार में, रैफल आउर मिसनगन खेलवाड़ में बीता है, हम जानता है कि लड़ाई नीमन

चीझ नहीं है बाकि देस के बेइज्जती लड़ाई से भी खराब चीझ है। हमको तैयारी खाली चीन खातिर नहीं करना है, इस खातिर करता है कि हमारा देस एतना हाईक्लौटी के पाँवर बन जाय कि कोई बाहरी तागद भारथ पर अटैक करने का हिम्मत नहीं करे। भारथ कभी दोसरा के सिवाना में नहीं जायगा आ न दोसरा के अपाना सिवाना में आने देगा।

गजराज : तब त बुझात हौ हमहन के जिनगी जुझहीं में ओरा जाई। कब तक तैयारी करत रहल जाई भाई ?

झासलाल : तैयारी कोई कितनी करे ?

लोहासिंह : खामोश, देस खातिर एक जिनगी के कहो हजार जिनगी भी कुछ नहीं है। जिनगी तैयारी का नांव है, जिनगी आगे बढ़ने का नांव है, जिनगी आग के समुन्दर में पंवरने का नांव है। जे ठोकर लागने पर गेहुँअन सरप माफिक फुंकार नहीं उठा ऊ मुर्दा है। जे देस के बेइज्जती बरदास करके पोंछ डोलाता है आउर आपुस में झांव झांव करता है ऊ कुकुर है। आपुस के झगरा आउर मोकदमा छोड़ के तैयारी करो नाहीं त भारथ के आनेवाली औलाद तुम लोग के ऊपर थूकेगा कि जब देस पुकारता था उस टैन हमारा दादा लोग मोकदमाबाजी का मिसिल तैयार करता था। जब फौज सिपाही मांगता था तब हमारा दादा लोग कचहरी में फौजदारी लड़ता था हमलोग के सबसे गलतफैमली वाला आदत है कि हमलोग अपाना अपमान, अपाना देस के बेइज्जती

बहुत जल्दी भुला जाता है। जिस कमजोरी का ओजह से हम लोग के मूडी पर कलंक के टीका लाग गइल बा उसको हरमेसा इयाद रखिये। उस कमजोरी के दूर करने खातिर जान के बाजी लगा दीजिये। राना परताप के साथी लोहार लोग के माफिक आजादी के दीवाना बनिये जे साढ़े चार सौ बरिस बाद, जब देस आजाद हो गइल तबे अपना गाँव वापिस लवटा, खन्दान के खन्दान साढ़े चार सौ बरिस तक जंगल में घूमता रहा बाकि गुलामी में अपना गाँव नहीं लवटा। आजादी नहीं त कुछ नहीं इज्जत नहीं त कुछ नहीं जबले ई देस परेम नहीं जोस मारेगा, तब ले इस देस का कैलान नहीं है। आपुस के भेदभाव छोड़ के गले मिलिये, देस खातिर सरबस तेयाग करने खातिर तैयार होखिये। भारथ सबसे अधिक सान्ती चाहता है बाकि देस के इस माफिक बनाइये कि सब लोग सिर ऊंचा करके जी सके जीने खातिर मरना जरूरी है, देस के तरंकी खातिर आपुस में एकता जरूरी है।

खदेरन की माँ : फाटक बाबा पूछत काहे नइखों। अबोई ई लोग झगरा करी ! आमार बढ़नो रे ई लोग के लाजो नइखे लागत।

पाटक : का महराज, बोलीं सभे, काग भुसुंडी जी लेखा चोंच बन्न करके मूडी काहे लटकवले बानी सभे ?

बुलाकी : पनिगर आदमी के डूबे खातिर एक चुरूआ काफी होला इहां पाहुन ई लोग के मूड़ी पर गगरन उभिल देलन। ई लोग से बोलल पार लागता ?

गजराज : हम त भैया हर तरह से देस बदे तैयार हईं, अब बाबू झामलाल जे कहैं ?

झामलाल : गजराज जी, मैंने अशर्फी से जो नकली कागज बनवाया था, लीजिये आप सबों के सामने फाड़ता हूँ। (कागज फाड़ता है) चलिये बुलाकी सिंह सुरक्षा कोष के चन्दा में मैंने ही रुकावट डाली थी और अब मैं ही सबसे पहले दूंगा भी। यही मेरे पाप का प्रायश्चित है।

पाठक : जेबा से हो गइल समझौता। चल हो बुलाकी सिंघ।

लोहासिंह : हमहूँ चलेगा। आपुसी झगरा मिटा के देस के तरंकी खातिर समझौता का साथ तैयारी करने वाली बटैलियन, रेडी, अटेनशन, फारवर्ड मार्च। लेफ्ट राइट, लेफ्ट। राइट, लेफ्ट।

(पर्दा गिरता है)

पुलिस से सहयोग

[खदेरन की माँ घर में अकेली हैं। सिताबी गज्जू के साथ आता है। गज्जू के घर चोरी हो गई है। सिताबी और गज्जू बाहर से पुकारते हैं...ए खदेरन बाबू के माई। ए खदेरन जी के मतवाराम।]

खदेरन की माँ : (दूर से) अइलीं, (निकट) के ह? सिताबी आ गज्जू। आ मार बढ़नी रे गज्जू भोरहीं भोरे रोवत काहे बाड़न। भीतर आजा लोग। का कहीं ए बचवा, आज भगजोगनी नइखे। घर के उदम धंधा में लागल रहीं।

गज्जू : हम बरबाद हो गइली। डबल निन्नाबे के फेर में परल हई।

सिताबी : गजब हो गइल ए खदेरन बाबू के माई। गज्जू के घरे चोरी हो गइल।

खदेरन की माँ : चोरी! आ मार बढ़नी रे। कवन बहरका चोरी कइलस। ओकर हाथे अंगर के चू जाई। का का गइल?

गज्जू : ई हम कुछ न जानत हई। हमरे घर पर लोहासिंघ कब्जा कइले हउऐं।

सिताबी : बेचारा गज्जू के चोरी में जे जाय के रहे से त गइबे कइल, उस पर से लोहासिंह पुलिस बोलावत बाड़न।

गज्जू : (रोकर) पुलिस। बाप रे हम पुलिस के कइसे बोलब। हमके बड़ा डर लागत है। हमार जान बचा द।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, चोरी भइल बा त पुलिस बोलावले न जाई। बे पुलिस के चोर कइसे धराई।

अब हम का जानी। सिताबी कहत हउअन कि चोर के पहिले पुलिस हमहीं के मारी कि हमरे इहां चोरी भइल तो काहें भइल? हम त रात भर चइता गावत रहली। भोरे अइली त देखली ताला टूटल है। दउड़ल लोहासिंह के कह देली। ऊ सउंसे बंदूक लै ले पहुँच गइलें। अब कहत हउअन कि पुलिस बोलाइब। बाप रे बाप, अब का होई?

खदेरन की माँ : धिरजा धर ए गज्जू। ऊ जे करिहें निमने करिहें। जा अपना घरे।

गज्जू : घरे कइसे जाईं, लोहासिंघ हम के घर में घुसहीं ना देते हउअन ।

सिताबी : कहत बाड़न कि पहिले पुलिस के जांच हो जाई तब केहू घर में हेली । गज्जू के कुक्कुर के चोर मूँह बान्ह देले बा । ओकरे के लोहासिंघ केहू के छूए नइखन देत । कुकुरा भूखे पियासे मू जाई ।

खदेरन की माँ : भला एह अपत के कवनो वारापारा बा ? आ मार बढ़नी रे जेकरे घर में चोरी भइल ओकरे के चोर लेखा घर से बाहर निकलले बाड़न, कुकुरा के मुँह में बान्हल रस्सी नइखन खोले देत । पुलिस बोलावस, बाकी ई कवन लूर में लूर ह ?

सिताबी : ना ए खदेरन बबुआ के माई, पुलिस आइल कि गज्जू गइलन बूँट लादे ।

गज्जू : बाप रे । पुलिस के आगे हम कइसे आँख खोल के ताकब रे दैया । हमार त बकारे न फूटी ।

सिताबी : ना चुप रहब । अब पांय पांय कइले बाड़ । लोहासिंघ मे कहे के पहिले हमरा से तोहरा पूछे के चाहत रहे कि ना ?

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, त तूँ का चोरी भइला पर पुलिस बोलावे के राय न देत ?

सिताबी : कबहीं ना । गज्जू ठहरले सोझिया इमदी, कचहरी के फेर में परिहें त चउपट हो जइहें ।

गज्जू : हम हाथ जोड़त हईं खदेरन के माई । हम अकेला आदमी, संतोख कइलीं । जे हमरे भाग में ना

रहल चोर ले गयल ! चल के लोहासिंह से कह द कि हमके पुलिस के सामने कठघरा में मत खड़ा करें।

खदेरन की माँ : रह जा तनो ताला बन्न कर लीं। फाटक जी आ बुलाकी भैया कहां बाड़न ?

सिताबी : उहो लोग उहैं लोहासिंह संग पहरा देत बा। केहू के लोग नियरा जाहीं नइखे देत।

खदेरन की माँ : चल, कम से कम कुकुरा के मुंह उनका खोल देबे के चाहीं। अनबोलता जीव भूखे पियासे पटपटात होई। चल।

(दरवाजा बन्द करके जाने को होती है। दूरी पर बिगुल की आवाज़।)

गज्जू : जल्दी चल, देख बुलाकी सिंह बिगुल बजा के पुलिस बोलावत हउअन।

(गज्जू के मकान के आगे का हिस्सा। लोहासिंह पाठकजी और बुलाकी सिंह मकान का पहरा दे रहे हैं। गाँव के लोग टूटा हुआ ताला आदि निकट जाकर देखने को उत्सुक है.... कोलाहल "ए भाई तलवा कइसे तुरलस, चोरवा कवना रस्ता से निकलल, अजब जबाना आ गइल बा, चोखा कुक्कुर के मुँह बान्ह देलस, लोहासिंह देखे काहे नइखन देत, चल चल देखे के।")

लोहासिंह : खबरदार, जे जौना जगहा पर हैं ओहिजे खड़ा रहिये। केहू नियरा आने का कोरसिस करेगी त मारते फैट के नाक बोल आलू रैट कर घालेंगे। हम फौरन से पेस्तर पुलिस बोला के हाई कलौटी का इनकौरी

करावेगा। अगर आप लोग चोर के गिलिफदार आउर माल के बरामद कराना चाहते हैं त; इस जगहा पर कवनो चीझ का साथ कनकसन नत कीजिये।

पाठक : रउआ लोग के जेबा से ई कवन आदत ह कि कवनो चीझ के बे गिजले संतोखे ना होखे? जजमान कबे से कहत बाड़न कि दरोगा जी के आवे से पहिले एहिजा के कवनो चीझ छू छा नत करीं सभे बाकि रउआ लोग बानी कि जेबा से खरदूसन लेखा कपार पर चढल आवत बानी।

बुलाकी : (एक अजनबी को पकड़ कर आता है।) हट लोग, हट लोग, अलगे खड़ा रह, एहिजा कवनो तमासा लागल बा कि बाइसकोप नौटंकी होता? पाहुन, हई एक जाना बगइचा में धइले ह।

अजनबी : हम का कवनौ चोर हईं! हम त चइता के गवनई सुने आइल रहीं।

बुलाकी : ई बहुत रंग बान्हत बाड़न पाहुन। आवते ना रहन। छटकल जात रहन।

लोहासिंह : ऊ रंग बान्हता है त तुम उसको हाथ आउर गोड़ बान्हो। गाँव के बाहर किसी आदमी के निकसने मत दो, चाहे ऊ गाँव के होखे भा बाहर के। ग्राम रच्छा दल का मदत से तुम सबके टंगरी फुलिस्टौप मारो।

अजनबी : रउआ लोग असराफ इमदी के बेइज्जत नत करीं, सोझे मने हमरा के जाये दीं।

बुलाकी : असराफ बाड़ त असराफ लेखा रह, पैंतरा नत बदल ।

पाठक : हउ देख जजमानिनां चहुंप गइली । जेबा से उनका संगे गज्जू आउर सिताबियो बाड़न ।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, ई का तमासा लगवले बानी जा । जेकरा घरे चोरी भइल ओकरे के घर में घुसे नइखीं देत ।

लोहासिंह : कानून का साथ गलत फैमली नत करो खदेरन को माई । दरोगा जी के आने का पहिले हम केहू के एहिजा गड़बड़ फिकेसन नहीं करने देगा ।

गज्जू : सुनत नहऊ खदेरन की माई । बे पुलिस बोलवले न मनिहें ।

सिताबी : (धीमे) पुलिस आई त तोहरे हथकड़ी लगी इहो इयाद रख ।

खदेरन की माँ : बड़ा हतेयार बानी सभे । गज्जू के कुकुरा के काहे नइखीं खोल देत । सुनलीं की चोर ओकर मुंह बान्ह देले रहे ।

लोहासिंह : (नाराज) गज्जू का कुकुर भारी गदहा है । ई चोर से अपना मुंह बन्हवा के अपाना डिप्टी से गाफलत किया । जबले दारोगा जी इसको इनकौरी नहीं करगा हम इसको पौजीसन में चैंजर नहीं होखने देगा ।

पाठक : ई कुक्कुर जेबा से कुक्कुर : कुल कलंक ह जजमानिन । गीताजी में कहल बा स्वान निद्रा तथैवच। एकरा पहरा न देबे के चाहत रहे ।

बुलाकी : राते गाँव के ढ़ेर लोग चइत गावत रहे। चोरी जरूर भोर में भइल ह। चोर नां धराई त ग्राम रच्छा दल के बड़ा सिकाइत होई। अपने सभे के चोर पकड़े में हर तरह के मदत करे के चाहीं। बहिनियां त गज्जू के फेर में नत फर। ऊ बकचोन्हर दास भोरहीं से पुलिस के नांव सुन के छान्ह पगहा तुडावत बाड़े।

गज्जू : (रोकर) पुलिस आके कही कि बयान द त हम कइसे बोलब ?

(लोग हंसते हैं)

लोहासिंह : सटअप। हंसी के फुलिस्टौप लगाइये। गाँव के लोग के ई भारी देहाती बेकुफाना को बात है कि ऊ लोग पुलिस से डेराते हैं। सांच पूछिये त सुराज के बाद से पुलिस पाबलक का सबसे अबल मित्र है। पुलिस के बारे में रंगरेजी राज का टैन वाला ओनियन चेंजर कीजिये।

पुलिस आपका जान आउर माल का हिफाजत खातिर डकइत आउर सी किलास का देस दरोही लोग के पकड़ने में अपाना जान का बाजी लगा देती है। पुलिस के मदत करना आपको अपना एड-भान्टिज के बात है। आज जब चीन हमारा सिवाना पर किसिम किसिम के बदरेसन करता है, जब फिर से संकट के करिया बदरी गरजन करती है तब बहुत जरूरी है कि देस में चोरी आउर डकैती का गलत फैमली एकदम नहीं होखे। भीतर सान्ती रहेगा तबे हमलोग पूरा तागद के साथ दुस्मन के